BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - आठ
प्रबन्ध - परीक्षा

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता (GT))
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U)

युद्धवीरक कथा (व्याख्यान - II)

मल्लदेव कुमार कन्नौज नामक राज्य सँ विदा भेल आ पहुँचलाह चित्रकोर नामक राजाक राज्यमे पहुँचलाह। ओतय काशीश्वर (जयचन्द्र) चतुरंगिणी सेनासँ साजि चित्रकोर विरुद्ध विदा भेलाह। ई दृश्य देखि राजा चित्रकोर अपन मन्त्री सबहक संग परामर्श कयल जे काशीश्वर कुपित भ हमरा दिस आबि रहल अछि। उक्त आगमिक राजमहलमे नहि रहितहु पुन मल्लदेव सबकिछु पहिलुक सबटा कथा सुना देलनि। चित्रकोर के आश्चर्य भेल तखन उचित की अछि मल्लदेव कहलनि - आ हमरा उद्देश्य सँ आयल छी अपने नहि घबराऊ। चित्रकोर आ मल्लदेव कुमार मे युद्धक वार्तालाप होइत रहल। कुमार कहलक - ई विवाद व्यर्थ थिक।

चित्रकोर बाजल - जखन विजय कठिन होइत एकर सँ? रहैछ। सदैव समान बलवालामे युद्ध संभव होइछ। किन्तु सबल शत्रुबलमे आगिमे फतिंगा जकाँ के झरि मरैछ।

(2)

कुमार कहलनि - यश पचलाक इच्छा सँ जे युद्ध मे
मृत्युक वरण कयलक आढ़ितकरा हेतो प्रबल शत्रु
सँ सेयक अवकाश कत।

प्राण बचयबाला जे व्यक्ति युद्ध सँ पड़ाइत
छथि तनिका मृत्यु तँ होइत नहि छनि किन्तु आदित
विशेष होइत छनि उनक कापुरुषताक प्रकृति करण।
चित्तौर-कुमार, अहाँ महान छी वीर छी। काशी
नरेश महाराज छथि। अहाँक हृदय बीच लागै हम
सुनि नहि सकैत छी, देखबाक कोन कथा। कुमार-युद्ध
करैलेल तत्पर छलाह। कुमार चित्तौर के कहलनि
यदि अपने युद्ध देख नहि चाही तँ कतहु यमुना तट
अवलम्बित स्थान मे जाय अपने आमार भेल जाय।
हम तँ युद्ध करब करब। हम तँ अपनेक शून्यो
नगरक पर्यवेक्षण करब। राजा चित्तौर आतंक
सँ पड़यलाह।

Samjit Kumar